IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Bhartiya Sanskriti ke Unnayak Kavi : Goswami Tulsidas

1. Hemraj Kanwar Shekhawat 2. Dr. Rajesh Kumar Sharma

1. Research Fellow, Department of Hindi, Bhagwant University, Ajmer Rajasthan

2. Associate Professor (Retired), Department of Hindi, S.P.C. Govt. College, Ajmer Rajasthan

सारांष

''मानव जीवन के आचार–विचार का परिमार्जन संस्कृति है।''1

''संस्कृति व्यक्तिगत अन्तर्वृत्ति का सामाजिक संस्करण है।''2

'संस्कृति' एक भावात्मक शब्द है। इसकी अभिव्यक्ति मानव के आचरण से होती है, जिसकी व्याख्या की जा सकती है। जीवन और उसके परिमार्जन के प्रति उक्त दृष्टिकोण रखकर जिन आदर्शों और मूल्यों की प्रतिष्ठता की जाती है उनका संगठित और समवेत रूप है – भारतीय संस्कृति।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है। वह अनवरत जीवन्त है – अपने मूल वैदिक रूप में आजतक विद्यमान है। ''भारतीय संस्कृति अपनी अनेक अप्रतिम विशेषताओं के कारण अमर कही जा सकती है।''3

मुख्य शब्द : भारतीय संस्कृति और तुलसीदास

''गोस्वामी के प्रादुर्भाव को हिन्दी काव्य के क्षेत्र में चमत्कार समझना चाहिए।''4

डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र के अनुसार, ''भारतीय संस्कृति की चार विषेषताएँ है – (1) वह सनातन सतत् प्रवाही, सात्विक, समन्वयात्मक और सर्वांगीण रही है, जिसे तुलसी ने श्रुतिसम्मत शब्द में केन्द्रित किया है। (2) वह लोक कल्याण विधायिनी है, जिसे तुलसी ने हरिभक्ति पथ के द्वारा विवेचित किया है। (3)

वह आध्यात्मिकता प्रधान रही है, जिसे तुलसी ने संयुक्त विरति कहा है। (4) वह बुद्धिपरख रही है, जिसको तुलसी ने संयुक्त विवके से अभिव्यक्त किया है।''5

आचार–विचार पक्ष

संस्कृति के दो पक्ष है – आचार (संस्कृति का बाह्य पक्ष), विचार (संस्कृति का आन्तरिक पक्ष)। तुलसी ने दोनों ही पक्षों के उन्नयन की चेष्टा की है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि – ''श्रुतिसम्मत हरि भगति पथ, संजुत विरति विवेक। (मानस)'' जहाँ वे इस सूत्र में संस्कृति के आन्तरिक पक्ष को उभारते है, वहाँ वे बाह्य पक्ष को इस प्रकार स्पष्ट करते हैं – ''करव साधुमत, लोकमत, नृतनय निगम निचोरि (मानस)।''

यहाँ श्रुतिसम्मत तथा निगम निचोरि शब्द भारतीय संस्कृति के प्राचीनता एवं समानता के धोतक है। तुलसीदास ने श्रुति और निगम के आधार पर अपने संस्कृति शब्द संबंधी मत की प्रतिष्ठा की है।

1. आध्यामिकता – आध्यामिकता भारतीय संस्कृति का मूल आधार है। आध्यामिकता का आधार धर्म है। तुलसी ने सर्वसुलभ धर्म की व्याख्या की है – ''परहित सरिस धर्म नहिं भाई।''

2. भक्ति पद्धति – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार भक्ति रस का पूर्ण परिपाक जैसा तुलसी में देखा जाता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।''6 तुलसी की भक्ति पद्धति की सबसे बड़ी विषेषता है उसकी सर्वांगपुर्णता। जीवन के सभी पक्षों का एक साथ सामन्जस्य है।''7 ''.....तुलसी चाहत जनम भरि, रामचरण अनुराग।''

3. ज्ञान–कर्म उपासना समन्वय – भारतीय संस्कृति ज्ञान, कर्म, उपासना को समान महत्व प्रदान करती है। तुलसी ने अपने भक्तिपंथ में इन तीनों का समन्वय किया है।

''प्रेम–वारि–तरपन भलो, धृत सहज सनेहु। संयम समिध, अगनि छमा, ममता–बलिदेहु। (विनय पत्रिका)

4. लोकाचार – लोकाचार परिवार और सामाजिक जीवन का आधार है, अतः तुलसी ने चरित्र अंकन के माध्यम से भारतीय संस्कृति के अनुकूल लोकाचार को दर्शाया है। राम की मातृ–पितृ भक्ति के प्रति उनकी श्रृद्धा है। वनगमन के समाचार पर राम कहते हैं। ''सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी। जो पितु मातु वचन अनुरागी।

5. समाज – तुलसी ने एक आदर्ष समाज की प्रतिष्ठा की है और आदर्ष पात्रों के चित्रण के द्वारा आदर्ष जीवन की, आदर्ष समाज की रूपरेखा प्रस्तुत की है। तुलसी सामाजिक समतावाद के पक्षधर है। ''सुधोमन, सुधोवचन, सूधी सब करतूति।''

6. मूल्य की प्रतिष्ठा – डॉ. रामविलास शर्मा तुलसी के सामाजिक और संस्कृति मूल्य पर लिखते है, ''तुलसी काव्य और भक्ति आन्दोलन का राष्ट्रीय महत्व यह है कि उससे भारतीय जनता की भावात्मक एकता दृढ़ हुई है।''8 तुलसी के साहित्य का महत्व भक्ति आन्दोलन के सामाजिक महत्व पर निर्भर है।

7. नीति – नीति भारतीय संस्कृति का अति विषिष्ट आधार है। तुलसी ने यत्र–तत्र अनेक प्रकार की नीतियों का उल्लेख किया है। तुलसी ने राजा का आदर्श प्रस्तुत किया है।

''मुखिया मुख सो चाहिए, खान–पान को एक।

पलहि पोसहि सकल अंग, तुलसी सप्ति विवेक।''

8. वर्णाश्रम–धर्म – भारतीय संस्कृति ने आदर्ष जीवन को महत्व देते हुए वर्णाश्रम की प्रतिष्ठा की है। तुलसी के काल में यह व्यवस्था मिट रही थी, अतः वे पर्याप्त संतप्त थे। उनकी वेदना झलकती है – ''आश्रम–वरन–धरम–विरहित जग, लोकवेद मरजाद गई।''

9. नारी आदर्श – नारी समाज का मूल आधार है। उसका आदर्ष भावी पीढ़ी के निर्माण में सहायक है। सीता का पत्नीत्व नारी आदर्ष का उदाहरण है, नारी पति की अनुगामिनी है, चाहे सम्पति हो चाहे विपत्ति – ''जिउ बिनु देहु बिनु बारी। तैसिहि नाथ पुरूष बिन नारी।''

निष्कर्ष –

इस प्रकार रामभक्ति शाखा के शीर्षस्थ, भारत के सर्वश्रेष्ठ भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास भारतीय संस्कृति के व्याख्याता, विष्लेषक, प्रतिपादक व उन्नायक है। उनकी जीवन दृष्टि और काव्य सृष्टि सबके लिए है।

डॉ. मिश्र के अनुसार, ''तुलसी ने अपने समय तक की समग्र विराट भारतीय संस्कृति को आत्मसात किया ही था, भविष्य के लिए उनके विषद रूप का अंकन और आकलन किया। इसलिए वे व्यास व शंकराचार्य के स्तर के संस्कृति उन्नायक भी माने जाते है। ..... भारतीय संस्कृति के धर्म दर्षन, काव्य कला इत्यादि नाना तत्वों के उन्नायक के रूप में तुलसी का स्थान इतिहास में अप्रतिम है।''9

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. तुलसीदास एक विशेष अध्ययन : डॉ. त्रिलोकीनाथ श्रीवास्तव, हरीश प्रकाशन मंदिर, आगरा पृ.सं. 115

2. तुलसीदास एक विशेष अध्ययन : डॉ. त्रिलोकीनाथ श्रीवास्तव, हरीश प्रकाशन मंदिर, आगरा पृ.सं. 115

3. भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति : डॉ. कालुराम शर्मा, पंचशील प्रकाषन, जयपुर पृ.सं. 01

4. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी पृ.सं. 72

5. तुलसीदास एक विशेष अध्ययन : डॉ. त्रिलोकीनाथ श्रीवास्तव, हरीश प्रकाशन मंदिर, आगरा पृ.सं. 116

6. चिन्तामणि : आचार्य रामचन्द शुक्ल, लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद पृ.सं. 117

7. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी पृ.सं.

8. निबन्ध संग्रह : सम्पादक डॉ. हेतु भारद्वाज, पंचषील प्रकाषन, जयपुर पृ.सं. 54

9. तुलसीदास एक विशेष अध्ययन : डॉ. त्रिलोकीनाथ श्रीवास्तव, हरीश प्रकाशन मंदिर, आगरा पृ.सं. 120